सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन

डॉ. कविता पाडेगावकर
शिक्षा विभाग,राजीव गांधी कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
ओबेदुल्लागंज, भोपाल (मध्य प्रदेश) भारत

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमनें भोपल क्षेत्र के 10 प्राथमिक विद्यालयों से 50 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं का समूह है। आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में अभिवृति एवं कार्य सन्तुष्टि के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि एवं अभिवृति में सार्थक अन्तर होता है। तथा शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं अभिवृति में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि कार्य सन्तुष्टि का अभिवृति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षकों को अपने कार्य से खुशी मिलेगी तो उनकी अभिवृति भी सकारात्मक होगी। तथा प्रबन्धक को शिक्षको के कार्य सन्तुष्टि के लिऐ प्रयास करने चाहिऐ।

मुख्यबिन्दु :– शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं, कार्य सन्तुष्टि, अभिवृति, प्राथमिक विद्यालय।

I प्रस्तावना

सर्व शिक्षा अभियान जिला आधारित एक विशिष्ठ विकेन्द्रित योजना है। इसके माध्यम से प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करने की योजना है। सर्व शिक्षा अभियान एक निश्चित समयावधि के भीतर प्रारंभिक शिक्षा के सर्वभौमिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इसके लिए स्कूल प्रणाली को सामुदायिक स्वामित्व में विकसित करने रणनीति अपनाकर कार्य किया जा रहा है। यह योजना पूरे देश में लागू की गई है और इसमें सभी प्रमुख सरकारी शैक्षिक पहल को सम्मिलित किया गया है। सर्व शिक्षा अभियान की प्रगति को अनेक समस्यांए बाधित कर रही हैं। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में जो समस्याएं विभिन्न अवलोकनों, सर्वेक्षणों व शोध–अध्ययनों के द्वारा प्रकाश में लायी जा रही हैं। सर्व शिक्षा अभियान की रूप रेखा को अधिक जनोन्मूखी, यथार्थपरक एवं सर्वसमावेशी बनाने प्रयास किया गया हैं।

जो अभियान के प्रति उनकी अभिवृति को प्रदर्शित करती हैं। शिक्षकों की ये अभिवृतियाँ भी सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण मापदण्ड हो सकती हैं। जिनमें शिक्षक अभियान को आगे बढ़ा रहे हैं तथा स्वयं शिक्षक भी जिन पर अभियान के क्रियान्वयन की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी हैं। विभिन्न रूपों में परस्पर भिन्नताएं रखते हैं। ये भिन्नताएं भी उनके सर्व शिक्षा अभियान सम्बन्धी दृष्टिकोणों को प्रभावित करती हैं

वर्तमान में कार्यरत् वैसे विद्यालय, जहाँ शिक्षकों की संख्या अपर्याप्त है। वहाँ अतिरिक्त शिक्षकों की व्यवस्था की जाएगी। जबकि वर्तमान में कार्यरत् शिक्षकों को गहन प्रशिक्षण प्रदान कर, शिक्षण– प्रवीणता सामग्री के विकास के लिए निधि प्रदान कर एवं टोला, प्रखंड, जिला स्तर पर अकादमिक साहित्य संरचना को मजबूत किया जाए। सर्व शिक्षा अभियान जीवन–कौशल के साथ गुणवत्ता– युक्त प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की इच्छा रखता है। सर्व शिक्षा अभियान का बालिका शिक्षा और जरूरतमन्द बच्चों पर खास जोर है। वस्तुतः किसी भी शैक्षिक नीति के आयोजन एवं कार्यान्वयन में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। शैक्षिक नीति को इकाई स्तर पर विद्यालय संस्था में क्रियान्वित करने का दायित्व शिक्षकों पर ही होता है।

(क) अभिवृत्ति–

अभिवृत्ति और मूल्य दोनों का विकास काल्पनिक आधार पर होता है। सामान्य धारणा के अनुसार अभिवृत्ति व्यक्ति की वैयक्तिकता के प्रति पूर्व स्थिति का आभास दिलाते हैं। इससे यह स्पष्ठ हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं के प्रति पर्यावरण से क्या आशा करता है? परिणामस्वरूप अभिवृत्ति का अर्थ "तत्परता की दशा या स्थिति" से लगाया जाता है जो प्रेरकों के उत्पन्न करने में सहायक होती है। इसका वास्तविक रूप तब देखने को मिलता है जब एक निश्चित उद्दीपक के प्रति लगातार तत्परता के साथ प्रतिक्रिया का विचार किया जाता है। इसीलिए इसे क्रिया के प्रति तत्परता या परिस्थिति के प्रति तत्परता का भाव माना गया है। "रोकीज" आल्पोर्ट और अन्य विद्वानों ने एक मत से स्वीकार किया है कि जब अभिवृत्ति एक निश्चित वस्तु या परिस्थिति पर प्रकाश डालती है, तो व्यक्ति की क्रियाशीलता में वृद्धि होकर निश्चितता बनती है। **"क्रच–क्रच फील्ड तथा बैलेची" (1962)** "व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार उसकी अभिवृत्तियों को प्रतिबिम्बित करता है। यह किसी सामाजिक वस्तु के प्रति धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यांकनों, संवेगात्मक भावों तथा पक्ष या विपक्ष के क्रियात्मक सुझावों की अपेक्षाकृत स्थायी पद्धतियाँ हैं।"

(ख) कार्य सन्तुष्टि–

कार्य सन्तुष्टि का अर्थ विभिन्न अभिवृतियों के परिणाम से हैं, जिनका सम्बन्ध कार्यरत शिक्षकों के व्यवसाय से होता है। इसके साथ–साथ अपने जीवन को सुखमय बनाने के लिए जो अभिवृति वह रखता है, वह कार्य सन्तुष्टि का परिणाम ही होता है। हालांकि इस सन्दर्भ में और अनेक कारक भी ही सकते हैं, किन्तु प्रमुखतः

शिक्षकों की वह अभिवृति ही है जो उसने अपने व्यवसाय के प्रति बनाई है।

कृत्य–संतोष क्या है? इसे बताना सरल कार्य नहीं है। हिन्दी शब्द कोष अथवा शैक्षिक व समाज शास्त्रीय ग्रन्थों में इसकी निश्चित और सटीक परिभाषा नहीं मिलती है। वाक्य विन्यास के आधार पर कृत्य–संतोष दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रथम, कार्य और द्वितीय सन्तुष्टि। कार्य का अर्थ है संतोष प्रसन्नता। शादिब्क अर्थ में इस प्रकार अपने कार्य अथवा पेशे से प्राप्त होने वाले आन्नद और संतोष को कृत्य–संतोष कहा जा सकता है।

ब्लम तथा नेलर ने इसका अर्थ करते हुऐ कहा है– **"कृत्य–संतोष कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम है जिन्हें वह अपने कार्य या व्यावसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाऐ रखता है।"**

II पूर्व शोध कार्य

सिंह (1794): ने अपने एक अध्ययन में शिक्षकों के मूल्यों को मापने तथा इन्ही शिक्षकों की अभिवृत्ति और कार्य सन्तोष के साथ सहसंबंध को प्राप्त करने का प्रयास किया गया। इस अध्ययन में शिक्षकों के प्रधान मूल्यों को स्पष्ठ रूप से जानने का प्रयास किया गया। इसके अलावा यह भी ज्ञात करने को प्रयत्न किया गया कि शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनका दृष्टिकोण अनुकूल है या प्रतिकूल। प्रतिदर्श में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 517 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

गोन्जाल्वे एफ (1989): ने अपने अध्ययन "प्राथमिक अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का समालोचनात्मक अध्ययन" में पाया कि आधे से कुछ कम अध्यापक अपने कार्य नियोजन व कार्य दशाओं आदि से असंतुष्ट थे। असंतुष्टि का एक बड़ा कारण गैर–शैक्षणिक व अन्य सरकारी कार्यो से उनकी संलिप्तता थी। उनके विद्यालय में शिक्षण सम्बन्धी संसाधनों का अभाव भी कारणों में से एक था।

III समस्या कथन, उद्देश्य तथा परिकल्पनाएं

(क) समस्या कथन :– "सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन"।

(ख) अध्ययन के उद्देश्यः–

(i) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना (लिंग के आधार पर)।

(ii) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना (लिंग के आधार पर)।

(iii) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनकी अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(ग) अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

(i) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ii) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(iii) सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनकी अभिवृति में कोई सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

IV न्यादर्श तथा उपकरण

(क) अध्ययन का न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भोपाल क्षेत्र के 10 प्राथमिक विद्यालयों से 50 शिक्षकों को लिया गया। जिसमें 25 शिक्षक तथा 25 शिक्षिकाऐं है।

(ख) शोध विधि–

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

(ख) शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर

(i) **स्वतन्त्र चर** – कार्य सन्तुष्टि, शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं

(ii) **आश्रित चर** – अभिवृति

(ग) शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

(i) मध्यमान

(ii) मानक विचलन

(iii) टी टेस्ट

(iv) सह–सम्बन्ध

(घ) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण–

आंकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में अभिवृति एवं कार्य सन्तुष्टि के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

V विश्लेषण तथा निष्कर्ष

(क) विश्लेषण परिकल्पना :–1

तालिका क्रमांक :– 1

सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी मान
शिक्षक	25	65.07	3.23	4.2
शिक्षिकाऐं	25	62.12	6.09	

सारणी क्रमांकः 1 से यह ज्ञात होता है। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का मध्यमान 65.07 व 62.12 पाया गया। तथा उनका मानक विचलन 3.23 व 6.09 पाया गया। दोनों समूह के बीच भज मान 4. 2 पाया गया। जो सारणी मान से ज्यादा है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में सार्थक अन्तर है।

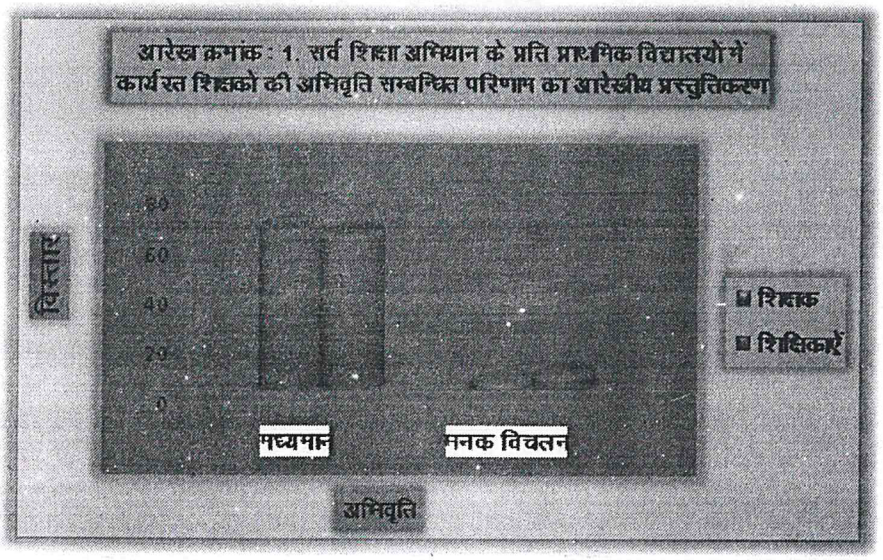

(ख) निष्कर्ष परिकल्पना 1–

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृति में सार्थक अन्तर होता है।

(ग) विश्लेषण परिकल्पना :–2

तालिका क्रमांक :– 2

सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि सम्बन्धित 'टी' परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी मान
शिक्षक	25	70.07	6.55	3.23
शिक्षिकाऐं	25	67.25	8.67	

सारणी क्रमांकः 2 से यह ज्ञात होता है। कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 70.07 व 67.25 पाया गया। तथा उनका मानक विचलन 6.55 व 8.67 पाया गया। दोनों समूह के बीच भज मान 3.23 पाया गया। जो सारणी मान से ज्यादा है। अर्थात् हमारी परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में सार्थक अन्तर है।

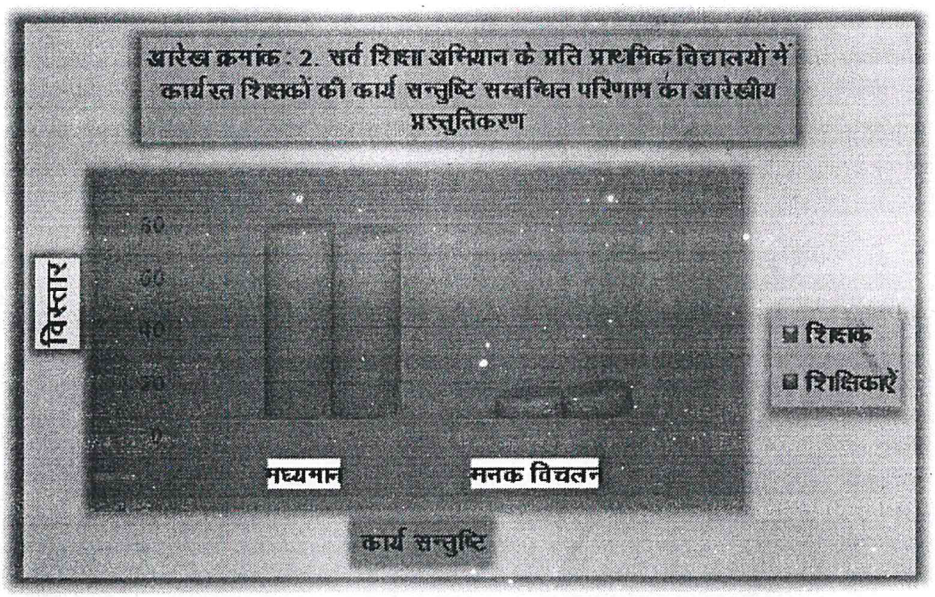

(घ) निष्कर्ष परिकल्पना–2

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

(च) विश्लेषण परिकल्पना :–3

तालिका क्रमांक :– 3

सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं अभिवृति के सह–सम्बन्ध संम्बधित परिणाम।

समूह	संख्या	मध्यमान	सह–सम्बन्ध
कार्य सन्तुष्टि	50	71.16	.842
अभिवृति		69.09	

सारणी क्रमांकः 3 से यह ज्ञात होता है। कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं अभिवृति का मध्यमान 71.16 व 69.09 पाया गया। दोनों समूह के बीच सह–सम्बन्ध .842 पाया गया। अर्थात् हमारी परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनकी अभिवृति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।" अस्वीकृत होती है। दोनों समूह में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

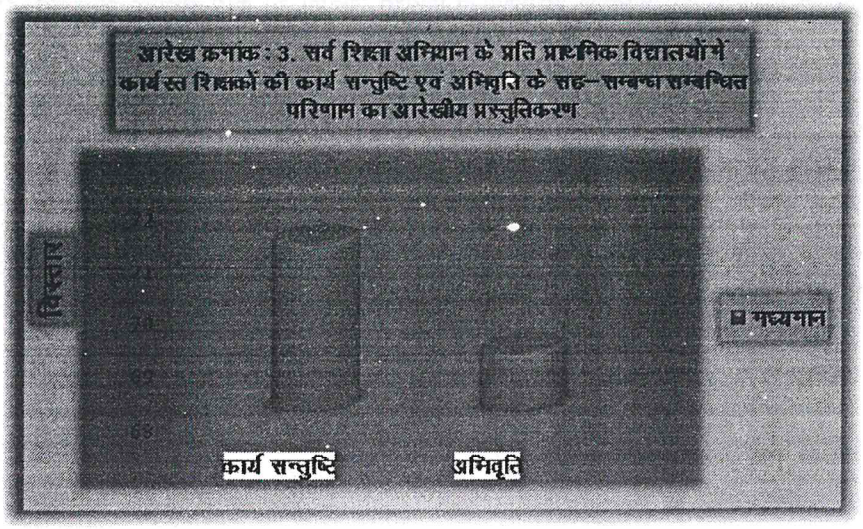

(छ) निष्कर्ष परिकल्पना–3

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनकी अभिवृति में उच्च स्तर का सार्थक सह–सम्बन्ध है।

VI परिणाम

सर्व शिक्षा अभियान की सफलता को बनाये रखने के लिए अप्रेल 2010 में बालक को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार नियम लागू किया गया। जिसके द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्य व उद्देश्यों को वैधानिक आधार प्राप्त हुआ है। सर्व शिक्षा अभियान द्वारा प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के सार्वजनीकरण को आधार मानकर ही राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की शुरूआत की गई। किसी भी क्षेत्र में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा किये गये शोधकार्य की सार्थकता तभी है जबकि उसका अधिकतम व्यवहारिक उपयोग किया जाये।

सर्व शिक्षा अभियान की सफलता के लिए विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की अभिवृत्ति का सकारात्मक होना आवश्यक है जिससे विद्यार्थियों को इस योजना का सम्पूर्ण लाभ मिल सके। शिक्षकों की सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए आवश्यक है कि उनकों अपनी कार्यस्थल पर सारी सुख सुविधाएँ एवं कार्य की संतुष्टि हो। यदि शिक्षकों को अपने कार्य से खुशी मिले तो उनकी अभिवृत्ति भी सकारात्मक होगी। प्रबंधक को शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के लिए प्रयास करने चाहिए। जिससे सर्व शिक्षा अभियान सफल बन सके क्यों कि शिक्षकों के कार्य संतुष्टि एवं अभिवृत्ति में उच्च स्तर का धनात्मक सम्बन्ध है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] गैरट ई. हैनरी (1966): "शिक्षा और मनोविज्ञान में सासंख्यिकी के प्रयोग" कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।

[2] गुप्ता. एच.पी. (2005): "सांख्यिकीय विधि" शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।

[3] लाल चंद (2004): "सर्व शिक्षा अभियान – क्षेत्रीय प्राथमिकता आधुनिक भारतीय शिक्षा", जुलाई वर्ष 23 अंक 43 एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

[4] यादव सी.पी. (2007): "सर्व शिक्षा अभियान" एजुकेशन फॉर आल वाई 2015, न्यू दिल्ली।

[5] अग्रवाल संध्या (2008): "शिक्षा मनोविज्ञान" अनुप्रकाशन जयपुर।